हिंदी साहित्य का इतिहास

सत्र – V पेपर नं – IX

डॉ.क्षितिज यादवराव धुमाळ
सदस्य हिंदी अध्ययन मंडल
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

इकाई – 1

आदिकाल

आदिकाल का काल – विभाजन और नामकरण

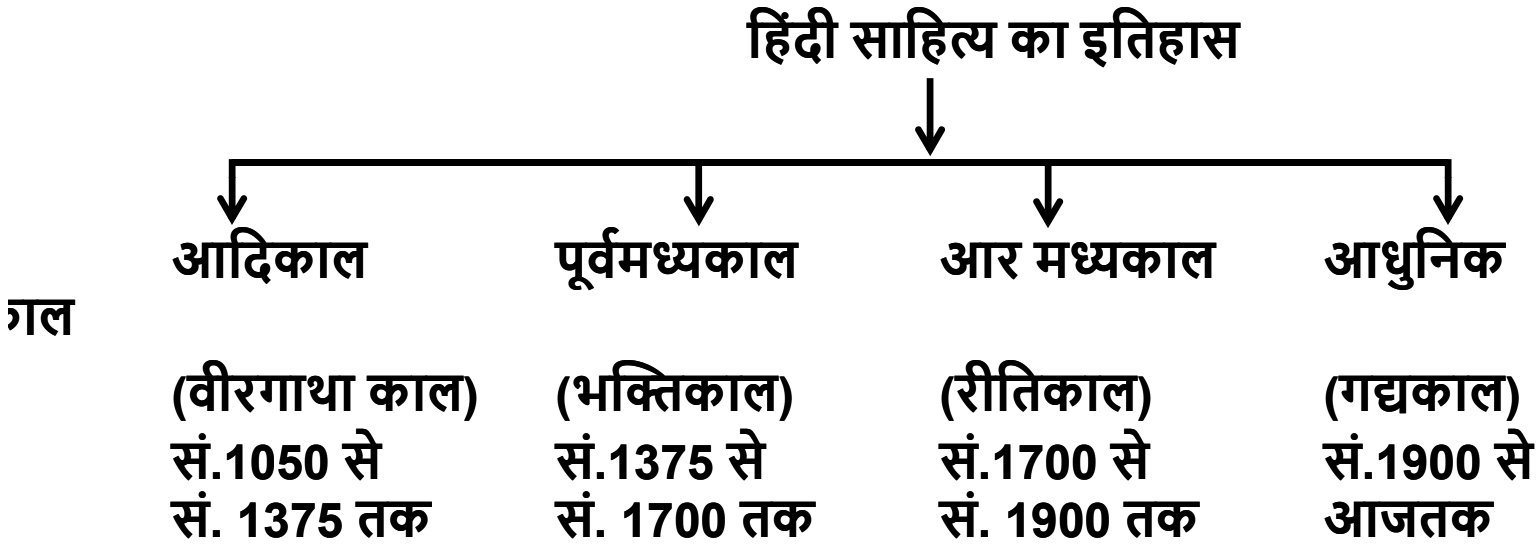

गल

आदिकाल के नामकरण:

- विरगाथाकाल – आ. रामचंद्र शुक्ल
- सिद्ध – सामंत युग – राहुल सांकृत्यायन
- चारणकाल - आ. महावीर प्रसाद द्विवेदी
- आदिकाल -

आदिकाल की सामाजिक परिस्थिति

- जातीव्यवस्था
- रुदिग्रस्त समाज
- राजा, सामंत और सामान्य जनता
- नारी के प्रति दृष्टीकोण
- विवाह एवं उत्सव

आदिकाल की राजनीतिक परिस्थिति

- अव्यवस्था और पराजय का युग
- केंद्रीय सत्ता का ऱ्हास
- महमूद गजनवी और शहाबुद्दीन गौरी के अक्रमण
- संकुचित राष्ट्रीयता की भावना

आदिकाल की प्रतिनिधी रचनाएँ

1. पृथ्वीराज रासो : चंदबरदायी
2. बिसलदेव रासो : नरपति नाल्ह

इकाई – 2

भक्तिकाल

“भक्ति द्राविडी ऊपजी लाये रामानंद!

प्रकट किया कबीर ने सात द्वीप नौ खंड|”

- **भक्तिकालीन राजनीतिक परिस्थितियाँ**
- **भक्तिकालीन सामाजिक परिस्थितियाँ**

भक्तिकालीन कावियों का सामान्य परिचय:

- नामदेव
- रैदास
- नंददास
- मीराबाई

इकाई – 3

निर्गुण भक्तिधारा

निर्गुण भक्तिधारा

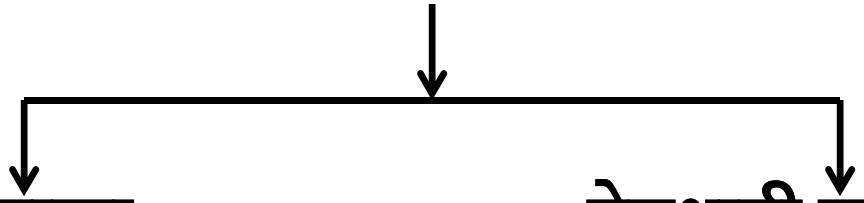

ज्ञानाश्रयी शाखा	प्रेमश्रायी शाखा
(संत कबीर)	(जायसी)

निर्गुण भक्तीधारा की सामान्य विशेषताएँ :

- ❖ निर्गुण ईश्वर में विश्वास
- ❖ अवतारवाद तथा बहुदेववाद का विरोध
- ❖ गुरु का महत्त्व

- गुरु का महत्त्व
- जाति – पाति का खंडन
- रूढियों और सामाजिक आडंबरों का विरोध
- रहस्यावाद
- भजन तथा नामस्मरण
- विरह वर्णन
- लोकसंग्रह की भावना
- नारी के प्रती दृष्टीकोन
- माया और शैतान
- हिंदू और मुसलमानों में एकता
- भाषा एवं शैली

- कबीर : व्यक्तित्व और कृतित्व
- जायसी : व्यक्तित्व और कृतित्व

इकाई – 4

सगुण भक्तिधारा

सगुण भक्तिधारा की विशेषताएँ

- ईश्वर का सगुण रूप
- अवतार भावना
- लीला रहस्य
- रुपोपासना
- शंकर के अद्वैतवाद का विरोध
- विविध स्त्रोत
- भक्तिक्षेत्र में जातिभेद की असामान्यता
- गुरु की महत्ता
- भक्ति
- लोक जीवन

- तुलसीदास : व्यक्तित्व और कृतित्व
- सूरदास : व्यक्तित्व और कृतित्व

धन्यवाद!